

## उत्तराखण्ड में पघिलते ग्लेशियर

### चर्चा में क्यों?

हाल ही में उत्तराखण्ड के पथौरागढ़ ज़िले में रणनीतिक रूप से मुनस्यारी-मलिम सड़क के किनारे **जौहर घाटी** की ओर एक **ग्लेशियर** सखलन/फसिलने की घटना हुई, जिससे **भारत-चीन सीमा** और क्षेत्र के गाँवों का संपर्क प्रभावित हुआ।

### मुख्य बिंदु:

- **सीमा सड़क संगठन (BRO)** ने सड़क साफ करने के प्रयास शुरू कर दिये हैं लेकिन व्यापक बर्फबारी के कारण चुनौतियाँ बरकरार हैं।
  - विशेषज्ञ इस बात पर जोर देते हैं कि ग्लेशियर का टूटना **जलवायु परिवर्तन** के बढ़ते प्रभावों की स्पष्ट चेतावनी देता है।
  - **ग्लोबल वार्मिंग** के प्रभावों के प्रति संवेदनशील **हिमालय क्षेत्र** को बढ़ते जोखिमों का सामना करना पड़ रहा है, जिसमें तेज़ी से ग्लेशियर पघिलना भी शामिल है।
- मार्च 2024 में पथौरागढ़ के ऊपरी क्षेत्रों में **हिमपात** देखी गई थी। अब तापमान बढ़ने के साथ ग्लेशियर पघिल रहे हैं, जिससे **हिम-सखलन** हो रहा है और कभी-कभी हिमखंड भी टूट रहे हैं।

### सीमा सड़क संगठन

- BRO की परिकल्पना और स्थापना **वर्ष 1960 में पंडित जवाहरलाल नेहरू** द्वारा देश के **उत्तर तथा उत्तर-पूर्वी सीमावर्ती क्षेत्रों** में सड़क निर्माण में तेज़ी से विकास के समन्वय के लिये की गई थी।
- यह **रक्षा मंत्रालय** के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्य करता है।
- इसने निर्माण एवं विकास कार्यों के स्तर में व्यापक विविधता ला दी है, जिसमें **हवाई क्षेत्र, निर्माण परियोजनाएँ, रक्षा कार्य और सुरंग बनाना शामिल है** तथा जनता के प्रति काफी लोकप्रिय है।